

3078

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक
प्रश्न नाम

१३३: वे ७ (२९३)
गीता-गणेश.

विषय

म० वेदांत.

(1)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥



(2)

गी. टी. प्रा. १

9

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ टीका ॥ ॐ ॥ तुज वि शिंजे म ६ ॥ स्वाला गिंतुं वक्र तुंड ॥ ज्ञानिया सिजर रंड ॥ उर नि अस सि ॥ १ ॥ ऐ शिया
सद्रु वि ता मणी ॥ तुसी अ उं कं पाते ह सवा हि नी ॥ तुची स्वयें गुरु पणी ॥ को ष्ठी तुळणी नये तु श्या ॥ २ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ॥ हे सा
मी तुझे जा धार ॥ कै से ल णसी ते ही वि चार ॥ ओ ल को सा चार य धाम ति ॥ २ ॥ ए वं ब्रह्मा सि आप पा ॥ सां गी तां दे करि स्त्र जन ॥ तो
सु णे तु मने वच न ॥ मज्ज सा गु मि तु म जे नि ॥ ४ ॥ ते दू वं वां मु र वा तु नि उ ड रं त ॥ वे धा सो हे ला ल रि त ॥ वै को क्य दे रि व रें ते थं ॥ जा का
वि स्मि त र जो गु णे ॥ ५ ॥ म ग ना भि रू म का पा स नि ॥ बा हे र का टि ला च ल रा न न ॥ वि भू स्त ण ती के ले र क्ष ण ॥ ते से नि र्मा ण करी वि ष
॥ ६ ॥ र जो गु णे भ्री ति मान सि ॥ सु णे हे क त्य न रा के रे वा सि ॥ ग र्व करी त व त्या सि ॥ वि षे नै यो सी पी टि ती ॥ ७ ॥ म ग तो जा ला का सा वि
स ॥ म नी आ ड वि स्वा मि स ॥ ते दं तु रां ध रि ला टि ज वे श ॥ के ला उ प दे श त या सि ॥ ८ ॥ जे जे हो ते कि पा व र ण ॥ सा चान ध री अ भी षा
न ॥ हो न जा त म क्त ते क रू न ॥ हे ल क्ष ण स ते वें ॥ ९ ॥ ब्र ह्मा पा व का नि ज ज्ञान ॥ स्वा मी तु ला च पा स न ॥ म ग ते णे के ले गु रू रू रू जन ॥ ते
जा प वा स्वी का रि ते ॥ १० ॥ के जो वो उ शो प वा रि त जा ॥ सि धी तु धी सा आ म ज ॥ अ र्थि न्या तु ज श्री गुरु रा ज्ञा ॥ आ ल क षा सा धि
ते ॥ ११ ॥ सि धी क उ रे श्व र्य स र्व ॥ तु धी ने दे हा दि अ व य व ॥ ही रो द्वा स म र्थि तां नु रं डा व ॥ स र्व श्रे व भा प वा सि ॥ १२ ॥ श्री गुरु रू रू ज ने
च तु रान न ॥ आ ला पा व न नि रा भि मान ॥ म ग जे करी कि या व र ण ॥ ते पा ष ण गु रू रू ज्ञा ॥ १३ ॥ ए वं धा ता करी स्त्र जन ॥ ते तु सी अ हो पा
क ण ॥ सा ति क री पा ष ण ॥ ज्ञान सं प न तु ज क री तां ॥ १४ ॥ ता म स करी सं हा र ॥ ते नि ज स ते वा ब डी वार ॥ या ला गि धा ता ह रि ह र ॥ अ
शा धार म भु वे ॥ १५ ॥ अ हो वि र ही त लं उ ॥ को ष्ठी मां टि पा पं उ ॥ या ला गे न क रू तुं उ ॥ करि रं उ प द क ति ॥ १६ ॥ ऐ शिया सद्रु व क्र तुं
उ ॥ ब्र ह्मा उ ना य का प्र चं डा ॥ तु श्या दि व की ति उं डा ॥ जे वां ज उ उ ध रि सि ॥ १७ ॥ आ को ति पा स न ॥ स्त पा व न ऐ को न ॥ को वा
व ले ल वें म न ॥ स मा धा न अ व णी ॥ १८ ॥ श्लो क ॥ स्त ल उ रा व ॥ अ धा र शं पुरा णे क म म तं प्रा शि तं ल या ॥ त तो शि र स व सा
तु मि का म्य म त मु च मे ॥ १९ ॥ टी का ॥ स्त ल णे हे वा सि ॥ अ धा र शं पुरा णे क धा र स ॥ म्यां प्रा शान के ले सा व का श ॥ परी म ज आ स का
ग ती ॥ २० ॥ श्लो क ॥ ये ना म त म यो भू वा प्रु यं ब्र ह्मा रं त य त ॥ जोग म तं महा भा ग त न्मे क रू ण या व द ॥ २१ ॥ टी का ॥ ज्या अ शे
व ने अ स्त्र प्रा स ॥ ते पा जि यो गं म त ॥ तुं क रू णा अ सि म र्थ ॥ करी म ने र थ सं श र्ण ॥ २० ॥ श्लो क ॥ व्या स उ वा च ॥ अ य गी तां प्र व क्ष्या
मि यो ग भ र्मा ज का शि नी ॥ नि क का ष ट के स्त रा जे ग ज मु रे व न या ॥ २१ ॥ टी का ॥ व्या स णे ऐ के रे क ता ॥ जोग प्र का शि ती गी ता ॥ जे
व रे णे पु सि ली स म र्था ॥ ए क रं ता ज व षि ॥ २१ ॥ श्लो क ॥ व रे ण्य उ वा च ॥ वि षे श्व र महा वा हो स र्व वि धा वि शार दा ॥ स र्व श श्च आ र्थ
त लं ज यो ग मे व कु र्म ह सि ॥ २२ ॥ टी का ॥ व रे ण्य णे वि षे श्व र ॥ हं स र्व श श्च त्पु रा ॥ पु र व्य यो ग दू या सा ग रा ॥ तो म न ध रा सा
गा वा ॥ २३ ॥ श्लो क ॥ श्री ग जान न उ वा च ॥ स म्य ग्नु च सि ता रा ज म ति स्ते नु ग्र हा म मा ॥ न्यु गी तां प्र व क्ष्या मि यो ग म तं म यो व
पा ॥ २४ ॥ टी का ॥ ग जान न ल णे पा र्था ॥ भा श्या अ नु ग्र हें बु धि मं ता ॥ अ ती पा व जी सो ऽ व क ता ॥ ऐ क वा तां क र व गो षि ॥ २५ ॥ ते स्त

9

(2A)

णसी कायसंग ॥ गीतांमससरि हो ॥ त्रिवाप्रवाहयोगमार्ग ॥ स्वाने निःसंग होइजे ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ नयोगयोगनिःसंगयोग
 योगेनचप्रियः ॥ नयोगोविषयेयोगेनवमात्रादिभिस्तथा ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ विषयांनयोगघटता ॥ किंवालस्त्रीबायावाजाता ॥ अथबांधु
 भलभेटला ॥ योगनिराकावाहनी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ योगेयः पितृमात्रेर्नसयोगेनराधिय ॥ योगेभोबंधुपित्रादेर्यथाष्टभित्तिभिः स
 २ ॥ ७ ॥ टीका ॥ जननीजनकावासंगमा ॥ तोयोगनहुइउत्तम ॥ किंबंधुपुत्रावासंभ्रम ॥ योगपरमहामदे ॥ २६ ॥ अष्टमासिधिवळगति ॥
 येवदुमहताचिप्राप्ति ॥ तरीहायोगनिश्चिति ॥ तोसाधुसंतिसेविला ॥ २७ ॥ श्लोक ॥ नसयोगस्त्रियायोगजगद्दुत्तुपया ॥ राउयो
 गश्चनोयोगेनयोगजवाजिभिः ॥ २८ ॥ टीका ॥ ईभकीउर्वेशि ॥ किंशतिलोत्तमासेजेसि ॥ कोमात्रिकाहिलेसि ॥ योगयासिनसयावे ॥
 ॥ २९ ॥ राउयआलेसार्वभौम ॥ ऐरावतीवाहममनोरम ॥ किंउत्तुअवातुरंगम ॥ पावलापरमयोगनहु ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ योगेनेइपदस्या
 यियोगेयोगार्थिनः प्रियः ॥ योगेयः सत्यलोकस्यनसयोगेमतोमम ॥ ३१ ॥ टीका ॥ इडिलेअर्थसंपूर्ण ॥ होतीपाबलेशकसदन ॥ र
 म्यहणतिब्रह्मभुवन ॥ योगपावनहानहु ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ शिवस्ययोगेयोगीवैखवस्यपदव्यय ॥ नयोगेभरपस्यलंबंडुलंबक
 वेरतो ॥ ३३ ॥ टीका ॥ तामसाभिमानीगर्भ ॥ स्वताभिमानिविद्युत्तम ॥ रवीहकुबेरसभाग्य ॥ यावासंगयोगनहु ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ आनि
 लखेनानलखेनमरखेनकालता ॥ नवारुष्यनेनेई ॥ योगेनसार्वभौमता ॥ ३५ ॥ टीका ॥ वायुअग्नि काकसर ॥ ऐसेनानायोगजवि
 चार ॥ मनांतनरस्थापिति ॥ ३६ ॥ श्लोक ॥ योगानानाविषयपरकंतिमनिनस्तत ॥ नवतिविलवालोक ॥ याचायोगनहुसाचार ॥ ३७
 जितहाराविरेतसः ॥ ३८ ॥ टीका ॥ जेतससराजनी ॥ आहारनियतनिराभिमानी ॥ लोकपावनज्याआदर्शनी ॥ नेतिमानीयोगीइ ॥ ३९ ॥
 श्लोक ॥ पावयसखिलास्त्रोकान्वशीकृतजगद्वयः ॥ कृष्णापर्णहृदयाबोपयंतिबक्रंश्वन ॥ ४० ॥ टीका ॥ ज्याविवाहृदृष्टीनिमाखी
 स्त्रताज्याचिब्रह्मकुडाली ॥ कुर्धुजातीअतीश्रांत ॥ ४१ ॥ श्लोक ॥ जीवमुकहृदमनाः परमानंदरूप ॥ हृदयीवस्तुसांठवलि ॥ ४
 णी ॥ निमीत्याक्षीणपश्यंतः परंवल्लहृदिस्थित ॥ ४२ ॥ टीका ॥ हृतेआक्रोषकाहति ॥ कोष्ठीबोदिलेसाहाति ॥ कोष्ठीताउणकरिति ॥
 तेमानितिप्रारब्धा ॥ ४३ ॥ श्लोक ॥ ध्यायंतः परमं ब्रह्मचित्तेयोगबशीकृत ॥ हृतीनिस्वात्मनाहृद्येसर्वाणिगणयतिते ॥ ४४ ॥ टीका ॥
 कोष्ठीयेकेसेआकर्षण ॥ कोष्ठीपरिलज्जामपर्ण ॥ योगीक्षणतिप्रारब्धप्रमाण ॥ शांतमनतयावे ॥ ४५ ॥ तेकृष्णाकर्षणव्यय ॥
 रतिमहीवरीसदय ॥ तमभ्रमनासीतोचिस्वर्य ॥ प्रकाशमयेयोगीइ ॥ ४६ ॥ श्लोक ॥ येनकेनचिदादिनायेनकेनचिदहताः ॥ येनके
 नचिदाकृष्णयेनकेनचिसाश्रिताः ॥ ४७ ॥ कृष्णापर्णहृदयाभ्रमतिधरणीतले ॥ अमुग्रहायभ्रतानजितकोषाजितेद्रियः ॥ ४८ ॥
 टीका ॥ लोकाभुग्रहाकरणे ॥ जालेअंगपरीराहणे ॥ जिडिलोकोधकरणे ॥ मातिसोनेसमने ॥ ४९ ॥ श्लोक ॥ ऐहमाभ्रमतोभ्रपसम
 लोषाभ्रकाचनाः ॥ एतादृश्यामहाभाग्यास्फुल्लगैवरप्रियः ॥ ५० ॥ टीका ॥ ऐशाचिद्रीअळंकृत ॥ योगीदिसतिविरागत ॥ स्वा
 चाजोयोगपंअ ॥ तोसाघेतसांगतो ॥ ५१ ॥ श्लोक ॥ तमिदानीमहवधुयेपाकेयोभ्रवसागरात् ॥ ५२ ॥ टीका ॥ जोरेकृतांचपापवि
 ळ ॥ रकवोनिज्येताकाळ ॥ जन्ममरुचीमा ॥ अणुयोगमनुतमं ॥ मुहायंभुयतेजंतुः ॥ ५३ ॥ हुटपळनसगतां ॥ ५४ ॥ सदाहि

(3)

१०-११-दी-मा-१

२

बलस्मीकांत ॥ आदि शकी आदिय ॥ योगीसमान लक्षित ॥ स हो द्वितवस्तुवि ॥ ५१ ॥ श्लोक ॥ त्रिवेदितो न शक्तौ च सर्वे मधि
 नराधिप ॥ याने दक्षु धि योगः ससम्यग्यो गोमतो मम ॥ २० ॥ टीका ॥ अभेदबुद्धी संशर्णा ॥ मुख्ययोग च हेतु ॥ अत्रिभिरितो
 जगत्संन ॥ संरक्षणते माझे ॥ ५२ ॥ श्लोक ॥ अहमेव जगद्यत्सा ॥ ज्ञानिपलया मिष ॥ कृत्वानानादि धुंवेपंसेहरा मिषकी लया
 ॥ २१ ॥ टीका ॥ आना प्रका रिवेवेष ॥ धरु निकरितो नाश ॥ तो विभीमहेश ॥ अविनाशप्रमि ॥ ५३ ॥ श्लोक ॥ अहमेव महा विष्णु
 रहमेव सदा कृिबः ॥ अहमेव महा शक्तिरहमेवार्थमाप्रिया ॥ २२ ॥ टीका ॥ मीनराया महाशक्ति ॥ मी च ज्ञानान भस्ती ॥ मी च ये कहे
 पति ॥ पो व मू ति मी जा जो ॥ ५४ ॥ श्लोक ॥ अहमेको न नाय जातः पंच विधः पुरा ॥ अज्ञानान्मानानं तिजगकारण कारणं
 ॥ २३ ॥ टीका ॥ के वळ जे अज्ञान ॥ माही नो हि वो ठरवण ॥ मी जगकारण च कारण ॥ मजपा कनि पंच भर्ता ॥ ५५ ॥ श्लोक ॥ मतो
 शिरा पो धरपी मत आकाशमा रतौ ॥ ब्रह्मा विष्णु शक्र रुद्र अ लोक पाजा दिशो दश ॥ २४ ॥ टीका ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ दिव्या उ वस्तु
 दिशा दश ॥ गो मुनी म्बु प म्बु स ॥ बाबा को शर्वे रव्या मि ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ बलवी मनवो गवो मुनयः पशवो पिव ॥ सरितः सामरा
 यक्षा दक्षाः पक्षिगणा भ वि ॥ २५ ॥ टीका ॥ सरिता यक्षसागर ॥ स्वर्ग पस्ती तवर ॥ गज बदन विष धर ॥ एक सा वर पुटी ल ॥
 ५७ ॥ श्लोक ॥ तथै क्विंशतिः स्वर्गानागाः सप्तवना मिष ॥ मनुष्याः पर्वताः साध्याः सीधार ह्योगणस्तथा ॥ २६ ॥ मनुष्यसाध
 पर्वत ॥ सिधसा ध देव ॥ हे मजपा कनि होत ॥ जग सम स्तवर प्या ॥ २७ ॥ मो सर्व सा श्री विश्व मान ॥ अति स का यी पा कन ॥ मी च
 गा जग जीव न ॥ सना तन मी ये क ॥ ५८ ॥ श्लोक ॥ अहंसा स्ती जग च हर सि सः सर्व कर्म भिः ॥ अ विकारो प्रमेयो ह मय को विश्व
 गो वयः ॥ २७ ॥ टीका ॥ मि अ विकार प्रमेय ॥ अथ क वि भग जग य ॥ मी पर ब्रह्म निरामय ॥ मी आ लु य ह र्वा ॥ ५९ ॥ श्लो
 क ॥ अहमेव परं ब्रह्मा य यानं हात्मकं न्य ॥ मोह अ ल वि ल मा वा श्रे षा म म न न न न ॥ २८ ॥ माझे माये मे मी हि ले नर ॥ ते लय
 ति आत्मा शरीर ॥ बरे प्या हे षु विकार ॥ ला वि ति पा न र स्तु सि ॥ ६० ॥ श्लोक ॥ सर्वं दाय क्ति क मे पु ता नि रं यो जय दृ शा ॥ हि सा
 जा पट लं अं दु र्वे कै जं न भिः शनेः ॥ २९ ॥ जने क जं न कर्म शि ॥ हो तां वित ले मा या पट ल ॥ फि ट ति र ज त म म ल ॥ दो य के व ल
 स ल शु धि ॥ ५३ ॥ श्लोक ॥ विरज्य विं व ति ब्रह्म विषये तु स बो धितः ॥ अ ठे यं शस्त्र सं घा तै र द ध्य मन ले न च ॥ ३० ॥ टीका ॥ शस्त्रे
 वस्तु तु रे ना ॥ तै सी पा व के ज ले ना ॥ क टं जे वे कु डे ना ॥ उडे ना मा रते ॥ ५३ ॥ श्लोक ॥ अहं धं भ र्णु व नै र शो ष्य मा रते न च ॥ अ व
 थं व ध्य मनि पि शरी रे स्मि न रा पि प ॥ ३१ ॥ टी का ॥ शरीर वे घे व स्तु अ व ध्य ॥ रे ति के ले वे द प्र सि ध ॥ मे धे सं शय तो अ व ध्य ॥
 आ वा षे द क रा वा ॥ ५४ ॥ श्लोक ॥ या त्रि मां पु ष्यो तां वा चं प्र शं सं ते कृ ती रि तो ॥ त्र यी मा द र ता म्बु टा स्त तो य न न ते पि न ॥ ३२ ॥
 टी का ॥ त्रि वि ध कर्म क दि ति ॥ स का म फ ले भे रा मी ति ॥ अ न म्बु क्ति वि या प ति ॥ पु न क ट ति पु नः पु नः ॥ ५५ ॥ श्लोक ॥ कु र्वे ति म
 त त कर्म ज नि क्त् फ क उ प्र दं ॥ स्व र्गै र्थ र्थ र ता ध्य स्त वे त ना भोग तु ध्य ॥ ३३ ॥ टी का ॥ स्व र्ग चं ए व र्थ भू त ॥ हो तां च वि त को षि
 त ॥ स का म का मे र त ॥ म्बु ट ये त को धो नी ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ स पा द्यो ति ते भू प स्वा ल ना नि ज यं ध न ॥ स सा र व ङ्ग क ज ति उ तः

२

(3A)

कर्मपरमरः ॥ ३५ ॥ टीका ॥ संसार चक्रं सोपउ ले ॥ जे कर्म निघु होउ निदे ले ॥ वा आगि विहू त आप ले ॥ अपभ्रं लं मज लागि ॥ ५ ॥
 श्लोक ॥ यस्य यद्दि हि तं कर्म तत्कर्म मर्दयं ॥ ततो ह्यकर्म बीजा नामु छिं ना स्फर्म हो कुरा ॥ ३५ ॥ टीका ॥ ते जे होये चित्त शुद्धि ॥ मग्र हो
 वे परमानंदी ॥ सासिक धी सोउ नको ॥ ५६ ॥ श्लोक ॥ चित्त शुद्धि मही दिज्ञाना सा छिं का भवेत् ॥ सर्वे चि ज्ञाना चि सि छि ॥ ५ ॥ वि
 ज्ञानेन हि विज्ञानं परं ब्रह्म मुनी श्वरे ॥ ३६ ॥ ज्ञाने विज्ञान प्रकाश ॥ योगी तमये उ ह भवे ॥ स्वयो नि सत्कर्म करी ऐसे ॥ बुद्धी समरसे
 पार्था ॥ ५३ ॥ श्लोक ॥ तस्मात्कर्म णिकु र्वे त पु धि क को न रा धि प्र ॥ न स्व कर्मा भवे कोपि स्व धर्म बाग बां स्या ॥ ३७ ॥ टीका ॥ कण्ठ ही ती
 निज विहित ॥ न वा कवे स्त नि स्थित ॥ त्यजितां हो य घात ॥ ही त्वा त ह तु नि ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ जहाति पदिकर्मा कितेतः सि स्थिं न वि दति
 ॥ आदौ ज्ञाने ना धि कारः कर्म ज्ये बसु क अते ॥ ३८ ॥ टीका ॥ कर्म विनये ज्ञाना ॥ सर्व धान हें उ सन ॥ स्व धर्म सु धु अंतः कर्पा ॥ होये
 पावन स सु धी ॥ ६१ ॥ श्लोक ॥ कर्म जामु ध ह द यो भेद बु धि तु पे यति ॥ स न योगः स्मार व्या तो ष्ट त वा य द्वि क त्यते ॥ ३९ ॥ टीका ॥
 ऐति जे अ भेद बु धि ॥ हे योग सम्य धी ॥ ये जो ही ये जो स सि धि ॥ एक स तु धि योग गुणा ॥ ६२ ॥ श्लोक ॥ योग मये प्र व च्या मि न्यु र्भु त्प
 त मु त मं प शो पु त्रे त था मि त्रे श क्रो धं धो स्त ह जे नो ॥ ४० ॥ टीका ॥ कुरु मु नि त्र वे दि ॥ वं पु स्त ह द सो ये रि ॥ वि धी दि से वा स्या कारि ॥
 वस्तु अंतरि ज भेद ॥ ६३ ॥ जे लो पा त्रे मा ती चो ॥ माम र्पे मि त्वा वि भि र्था रि तां श्रु ति का चि ॥ हो य सा चि अ जि न ॥ ६४ ॥ श्लोक ॥
 महि द्रव्या न स म हा ह क्त्वा लो क ये सु ज्ञान ॥ सर्वे तु दे त था मि ने ह वै भी तो स मो भवे त् ॥ ४१ ॥ टीका ॥ री ग ही तां भय ॥ सु ख दुर ख ह वा
 न्य ॥ जय हो को अ प जय ॥ वस्तु म ये जो दे वि ॥ ६५ ॥ श्लोक ॥ रागा दो शे ब भो गा दो ज ये वा कि न ये पि च ॥ श्रियो योगे च योगे च सा
 भा ता भे द ता व पि ॥ ४२ ॥ टीका ॥ स स्ती वै गी मन धी पि न ॥ आ ला भा कां म र्णा ॥ वस्तु मा त्रि स मा न ॥ म ज वां तु नि दे वि ॥ ६६ ॥ श्लो
 क ॥ लो मो मां वस्तु मा तेषु प थं नंत व दि ॥ ४३ ॥ स र्वे क्षां ते ज तो क्ते ॥ वि वे श क्रो त था नि ले ॥ ६७ ॥ टीका ॥ श्रु त्तं बं ड जे न व दि ॥ त सु
 क्षि व र वा नि ॥ जो हां न दी ती र्थ घ मा शि नी ॥ स्त्री नी ब्रा ह्म णी व र प्या ॥ ६८ ॥ श्लोक ॥ द्वि ते ह दि महान धं ती र्थे श्चै त्रे घ मा चि नी ॥ वि
 क्षो च स र्वे वै वे शु ते था य शो र गे शु च ॥ ४४ ॥ टीका ॥ वि कु आ दि स र्व दे व ॥ य सु उ ग गं ध र्व ॥ म नु ष्य जा पि मा नु भा व ॥ ते थं से भ क्ती र्थ
 चा ॥ ६९ ॥ श्रु त्तं ध र्वे शु म नु ष्ये पु त था ति र्थ भ वे शु च ॥ स त ते मां हि यः पश्ये त्सी य योग वि दु च्य ते ॥ ४५ ॥ टीका ॥ इ त्या दि का च्या र्ग ई ॥
 नि रं त र मा पा दि ॥ या सि प्र ति ति स र्व रा दि ॥ योग द्वा दि व र प्या ॥ ७० ॥ श्लोक ॥ वि वे द्या पा स न कर णे ॥ वि वे क वे के आ व र णे ॥ इ ति स म्भु धि
 रा द ये ॥ भू पा सि क्षु पो हा पो छु ॥ ७० ॥ टीका ॥ स्वं परा व स स्वा र्थे भ्य ई द्वि या णि वि वे क तः ॥ स र्व त्र स म ता सु धि स यो गो भ प मे म तः
 ॥ ४६ ॥ टीका ॥ आ ता ना त म वि वे क ॥ क रि तां स म्भु धि ही ये वा र व ॥ स र्व वा हे व स्तु ये क ॥ योग स म्प क हा भू पा ॥ ७१ ॥ श्लोक ॥ आ
 स्ना ना त्मा वि वे दे न बा सु धि र्दे व योग तः ॥ स्व ध र्मा स त्क चि त्त स्य त यो गो योग उ च्य ते ॥ ४७ ॥ टीका ॥ ध र्मा चा फ च या ग ॥ उ च्च
 र्मा वा के च्छे त्या ग ॥ स्व र्मा सि ज नु रा ग ॥ जोग चां ग हा ये क ॥ ७२ ॥ श्लोक ॥ ध र्मा ध मे जि हा ती ह त वा त्य क उ भा व पि ॥ अ नो योगा य

ग. गी. प्रा. टी. १

३

(५)

संजीतयोगो वै चैव कौशलं ॥ ४६ ॥ टीका ॥ कर्मैकतन्निरेक्यसिद्धी ॥ धर्माधर्मत्वजति यमधि ॥ बुद्धिमेति किं विवेकबुद्धिः ॥
 कात्रिपुत्रियेकयोग ॥ ७३ ॥ श्लोक ॥ धर्माधर्मफलव्यक्तप्रतीतिवित्तैर्द्वयः ॥ जनिर्वर्धयित्तिमुक्तः ॥ कृतं संयास्य नामयं ॥
 ॥ ४६ ॥ टीका ॥ जेहो अज्ञानकलुषा बुद्धीनेकमीलपुरुष ॥ तेंहो जर्मवंधुमुक्ति ॥ अतामंयद्यदास्यवेत्ततो ॥ ७४ ॥ श्लोक ॥
 यदास्यज्ञानकलुषं जंतो बुद्धिः कामिच्यति ॥ यदाहोमातिविरागं वेदवाद्यादिभुक्तमाह ॥ ५० ॥ टीका ॥ वेदजयी फळ संपेन ॥
 विषयतच्छयापासन ॥ वेदवाक्यकर्मकरुन ॥ तें निश्चळमनसमाधिरु ॥ ७५ ॥ श्लोक ॥ त्रयीविप्रतिपंतस्य रक्षणं तु संयास्य
 तैयदा ॥ परात्मन्यवेत्तबुद्धिस्तदासंयोगमाप्नुयात् ॥ ५१ ॥ टीका ॥ भ्रमोगतकामसकळ ॥ त्यागित्जें बुद्धिमासुक्त ॥ तेंआ
 त्मया वागई बुद्धीभवत् ॥ गृहयोगनिर्मुक्तवानतो ॥ ७६ ॥ श्लोक ॥ ननसानरिचलाकाशान्वयाधीनास्यजे त्रिय ॥ स्वात्म
 निस्तेन संतुष्टः स्थिरबुद्धिस्तदोच्यते ॥ ५२ ॥ टीका ॥ स्वानुभवेजोसंतुष्ट ॥ स्थिरबुद्धितोश्रेष्ठ ॥ विषयसुखापानिअनिष्ट ॥ नम
 निकष्टः स्वानुभवे ॥ ७७ ॥ श्लोक ॥ विरक्तः सर्वसौख्येणोद्दिष्टोऽहं स्वसंमतेषु गतसाध्वसरुद्रः ॥ स्थिरबुद्धिस्तदोच्यते ॥ ५३ ॥ टीका ॥
 आत्मने जे स्वज्ञान ॥ तो सर्वविषयान्तरुजा ॥ तेंसाह कामं पांशोका ॥ तोचिचे छिळास्थिरबुद्धि ॥ ७८ ॥ श्लोक ॥ यथायं कर्मठो
 गामि संकोचयति स्वतः ॥ विषयेभ्यस्तथास्वानिसंकर्ये योगतत्पर ॥ ५४ ॥ टीका ॥ विषयापासुनिकरणे ॥ अवेदरतयोगतभर
 सयो ॥ कर्मआंगे शोकिष्टे ॥ जेहो पाहये किंति ॥ ७९ ॥ श्लोक ॥ आनर्तस्य विषयाय काहारस्य वर्णनः ॥ विनारीगरागेपि
 हृष्टी प्रजनिनश्चति ॥ ५५ ॥ टीका ॥ रायायंतु करण्यो ज्ञानि ॥ योगस्थितिपावसाजनि ॥ तो हृष्ट फिजे इद्रायणि ॥ अग्निमा
 नीजरी विषई ॥ ८० ॥ श्लोक ॥ विपश्चिपतते ह्युक्तिमिमांसायमोगिनः ॥ मंथयहे द्विमाष्यस्यहरेतिवक्तोमनः ॥ ५६ ॥ टीका ॥
 कोहते इद्रिये गण ॥ पाववितले मन ॥ तेविनेकअवतन ॥ मजची पातठेवी ॥ ८१ ॥ श्लोक ॥ युक्तस्त्वानिवशो कलास्वदामसरोभ
 वेह ॥ संयतानी द्विवाधीहयस्यसकृतधीर्मतः ॥ ५७ ॥ टीका ॥ इद्रियानियम ॥ करणे वरास्वधर्म ॥ विषयचित्तनजुअम ॥ तेंपो
 काव वधीये ॥ ८२ ॥ श्लोक ॥ चिंतमानस्य विषयासंगस्तेषु जायते ॥ कामः संवर्तते तस्मात्ततः को भोमि वधते ॥ ५८ ॥ टीका ॥
 कृत कामे तवठे को ५ ॥ को धअज्ञानाचा संमाध ॥ ते जेहोयस्मृतिमंद ॥ ६० ॥ श्लोक ॥ त्वज्जगत्प्रतेय ॥ ८४ ॥ श्लोक ॥ को भवदज्ञान
 संहृती विभ्रमस्ततः स्मृतेः ॥ भवात्स्मृतेमते धं एस्तधं साहोपिनश्चति ॥ ५९ ॥ टीका ॥ स्मरणनसतां बुद्धिनाश ॥ बुद्धि
 नसि आयणास ॥ विसरणेहं कलुष ॥ तदिहाग्रे पराकावे ॥ ८५ ॥ श्लोक ॥ विनाहृदयं वरागे न गोचरा न्यस्तसि श्वरेत् ॥ स्वाधी
 नहृदये वश्यैः संतोषे ससमृच्छति ॥ ६० ॥ टीका ॥ जो आधीनकरीमानस ॥ तोविपक्ति संतोष ॥ संतोषे त्रितापस ॥ होयनाश
 सहजनि ॥ ८६ ॥ श्लोक ॥ त्रिविधस्यापि दुःखस्य संतोषे सुखं भवेत् ॥ प्रशक्तं संच्छिन्नं वायं प्रसंतं हृदयो भवेत् ॥ ६१ ॥ टी
 का ॥ आधीनकरी अद्वय ॥ आचे प्रसेन हृदय ॥ ते जेहोयस्मृती दय ॥ अप्रमेये वरेव्या ॥ ८७ ॥ बुद्धीविनाके सी प्रसेनेता ॥ त्वय

३

श्री केशी सत्वरसः ॥ वेकावीपयेका वि योग्यता ॥ नां हि पा र्थ प र्थीति ॥ ८८ ॥ श्री क ॥ विना प्रसादं नमस्ति विना मखानभावना
 ॥ विना तोनाशमो भूप विना तेन कुतः सखे ॥ ८९ ॥ टीका ॥ सत्वावीपा के चाराम ॥ रामवसतो स्वरु संभ्रम ॥ संगमनेन रावण
 वर्म ॥ यथाक्रम जाणामा ॥ ९० ॥ श्री क ॥ इन्द्रियास्वानि चरतो विषयाननु वर्तते ॥ मन्मनस्तन्मतिभ्या र्थनानवमरुपथा ॥ ९१ ॥
 टीका ॥ इन्द्रिये जे अं धां वति ॥ ते ध्ये भावति मने वति ॥ ते संशयार्थ जितुं ध्यावति ॥ फिर विमासु जे जे विनो का ॥ ९२ ॥ चारानिः स
 र्वजंतं तं तस्यो विद्राति नैव सः ॥ न स्वपती हते यत्र सारा अस्ति स्य भ्र मिप ॥ ९३ ॥ टीका ॥ जागसि आत्मविषयं राक्षि ॥ ते यो
 जायंतु गदे विगमस्ती ॥ विषयं जो क वर्तति ॥ निशा स्रणति ते यो गी ॥ ९४ ॥ श्री क ॥ सरितो पति मा यो तिमनानि सरितो यथा ॥
 अयो तितं यथा कासन शोति सदा भवेत् ॥ ९५ ॥ टीका ॥ नानासंशिता ने पुर ॥ आलेत पिसि ध गभिरु पते सेना लकमे यो गी ॥
 अनुमात्र न च लति ॥ ९६ ॥ श्री क ॥ अतस्त्वाही हं सं ह्य सर्व शः स्वानि मानवः ॥ सत्वा र्थे भ्यः प्रधावति तु धिरस्य स्थिरा तेरा ॥ ९७ ॥
 टीका ॥ जे से विषयं विषयां सी ॥ ते से जे र त स्व दितो सी ॥ स्थिर बु धि ते मा सि जे सि ॥ वि ध सि जि ज प्रभा ॥ ९८ ॥ श्री क ॥ मम तर्मु ठती
 लका सर्वा कामां श्रय सजे ॥ नित्यं ज्ञानरतो भयशा नाना मुदि स या स्य सि ॥ ९९ ॥ टीका ॥ ममता अतं ता ज गि ॥ मग र्थी कर्तुं को प्री ॥
 जो ज्ञाना म त भुं जी ॥ ते जा के मा सि वि भ्र ति ॥ १०० ॥ श्री क ॥ एनां कल धियं भूपयो विना ना ति देवते ॥ तु र्यवि स्वा प्राप्या विशी
 तमु तिसं कृ तति ॥ १०१ ॥ टीका ॥ हे शि जे व लु ति ॥ देव को गे वा वति ॥ तु र्म भू त नि पर ति ॥ योगि जाण ति ते दशा ॥ १०२ ॥ गणे
 शराहा सि स्पृ ॥ उप दे शी गणेश श्रेष्ठ ॥ सांख्ययोग स र्व वि ध नाना वि ध यो ह मि ॥ १०३ ॥ इ ती श्री ग पो शनी ता इ ॥ एव ज्ये सु
 स्व सि धु ॥ सं यो गे भरि ते जग ॥ ल व वा लु भे कि ने ॥ १०४ ॥ ॥ ०० ॥ तस्य इति श्री मद्रु गे श नी ता रू प नि ब र्थ ग भी सु यो ग
 मता र्थ शास्त्रे श्री म हां गणेश उ रा पो श्री ग ज्ञान म क र्ण्य सं वा दे सा र्थ्य सा रा र्थ यो गो ना म प्र थ मो ध्या यः ॥ ॥ अ प ज
 य स मु रु चिं ता म पि ॥ प्र म्थ य स रू नो भू त वा णी ॥ तुं प्रि जा त म क र्ण्य वि र वा णी ॥ धां व ति नि र्वा णी तं वि ये क ॥ ११ ॥ नि का म क ति
 लु क्ते ॥ न व से भ ता वि भ्र णी सि ॥ गु ण गु ण या सि ॥ स रा रो वि नि का म ॥ २ ॥ को षी ये के दि व सि ॥ ग ण आ ले रू णी पा सि ॥ मु ती
 भो ज न दे सा सि ॥ जे विं सम र्पा सि प य पा न ॥ ३ ॥ किं वि र्ते म ही ना वा ॥ प्र तों सु यो क र्ण्य नो वा ॥ वि ज म णी हा पि मु नी वा ॥ जे वि र्ते
 वा वि ग्रा स ॥ ४ ॥ म ग तो कृ पि ल नि का म ॥ अ रं स क र्ण्य नो वा ॥ स्वा मी नि स ह र्ण का मा ॥ आ त्मा रा म स र्वा वा ॥ ५ ॥ जे से स्र
 ति चे जी व न ॥ स सा श्री हा वी र्ण्य ध य ण ॥ रं भो र रि वु तो र्ण ॥ हो य जा प ण क र्ण्य र ॥ ६ ॥ सर स्व ती वा मे ॥ हो तो चि ते तु कौ क
 ठ ॥ ते वि शो प मु र्ती ह र्ण क ॥ गं ग ज च ग गे त ॥ ७ ॥ किं ते क र्ण्य चं त क ॥ किं ते क र्ण्य चि त क र्ण्य ॥ भ्र मि सि हो तां पं क ॥ न दि से
 ले श त ल को दि ॥ ८ ॥ ते सां तुं सर्वा त्मा रा म ॥ पर म भू ते अ प्र मो त म ॥ व ती स्र ण ती ज न मे ल ॥ परी क र्ण्य अ र दि वि थ ॥ ९ ॥ ते
 साम णी मु नी पा सि ॥ तो वि ग णा हे स सा भि वा सि ५ प र प्रा सां या वि द्या सि ॥ प्र व र्ण्य सर्वां सि प्र मा ण ॥ १० ॥ स क र्ण्य तु त स रो नि ॥

(4A)

श्री. मा. टी. २

४

(5)

कपलपावला विमर्षी ॥ मगतो लयों चिंतामणी ॥ तुज ना तु नि दे व दे रा ॥ ११ ॥ दे वा तुं वां सां स्म यो ग ॥ उप दे की का वां ग ॥ आ वि
 लय ति कर्म मा गी ॥ तो कि अ वे ग भे जां वें ॥ १२ ॥ श्लोक ॥ दे व्य उ वा च ॥ ज्ञान नि श्रु कर्म नि श्रु द्य श्रो क स्व या वि भो ॥ अ व ध र्थ व द्दे
 क्से निः श्रे य स करं तु किं ॥ १३ ॥ टी का ॥ तरे प्य ल यो स्वा मि ॥ दो कि नि श्रु वा बो लि ले त तु ली ॥ अं ती को ण ते दु ल मो क्ष प त्री ॥ ते सु र व प
 प्रा सं ग तं वें ॥ १४ ॥ श्लोक ॥ श्री ग ज्ञान उ वा च ॥ अ शिं श्र रा च रं लि लो पुरो के हे म वा प्रिय ॥ श्री र व्या नं तु शि यो गे न वै ध यो गे न
 कर्मि णो ॥ १५ ॥ टी का ॥ ग ज्ञान न ल यो दो किं ॥ ग ग ट ले म न वा क नि ॥ अं श र व्या ना मि धा नी ॥ कर्म मा नी वै ध यो ग ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ अ
 ना रं मे ण वै धा नो जि क्षि मः पुरु षो भवे द् ॥ न सि धिं का ति सं त्या गा के व ल क र्म णो न य ॥ १७ ॥ टी का ॥ क मा रं भ के ली था वि या ॥ पुरु
 ष ले य क र्म ही न ॥ अ सि सि धि न हे र्णो ॥ श्रि या च र ण रा कि ता ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ क दा वि द् क्रि मः को पि ध्र णं जे न व ति ध्र ति ॥ अ
 ख तं तः प्र कृ ति जै र्गु णोः क र्म च का र्य ते ॥ १९ ॥ टी का ॥ ये दु वी त री गा पा ध्या ॥ को ण रा हे क र्म क रि तो ॥ इं दि ये रा हू ट ति स्व भा व ता ॥
 सं वं स ता प्र कृ ती ची ॥ २० ॥ श्लोक ॥ क र्म का री द्वि य ग्रामे वि य म्या से स्म र मु मा म् ॥ त दो च रा न्द्र वि तो धि गा चारः सु भा श्य ते ॥
 ॥ २१ ॥ टी का ॥ शो का से द्वि ये अ व रि ॥ म न धां वै वि षं वां ब र्मि ॥ धि क्तो जि दुरा रा री ॥ म नी ध री भ ल ते वि ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ त द्ग्रा म सं नि
 य म्या दो म न सा क र्म च श्लो क ॥ इं दि येः क र्म यो गं यो वि ल लः सु प रो नृ प ॥ २३ ॥ टी का ॥ अ व रू नि द् द्वि य ग्राम ॥ म न र्च के री क र्मि स
 सं सर्व दौ निः का म ॥ तो वि पर म स्व का र्म ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ अ क र्म णः श्रे ष्ठ त मं क र्म नी छा क र तु य व ॥ व र्ष णः सि ति र प्य स्वा क्त
 र्म णो ने व से त्स्व ति ॥ २५ ॥ टी का ॥ क र्म त्या ग ज तु क्ति ॥ निः का म कि मा ते क र ॥ को र्म स्त व दे ह व र त ॥ यो त कृ त तै क रि ॥ २६ ॥
 श्लोक ॥ अ स म र्प नि व धं ते क र्म ते न ज ना अ वि ॥ कु र्म त स त तं क र्म ना प्रो सं गो म दर्प णो ॥ २७ ॥ टी का ॥ व रे ण्यं जें कां क र्म च र
 ण ॥ म ज नो र्धे ते वि धं ध न ॥ जें हो म म दर्प ण ॥ प्रो क्ष स द न ते क र्म ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ म दर्प या नि क र्मो कि ता नि व धं ति न कृ चि त् ॥ अ
 वा स न मि दं क र्म व धा ति दे दि नं व ला ट ॥ २९ ॥ टी का ॥ ग गे द क ना णा व या ध र ॥ त्या न्ने सा ध र का च दो रा ॥ की मा का गुं क व या
 भु व रा ॥ घ ट व रा यो जि ल ॥ ३० ॥ टी का ॥ सा धा व या अ न ठ ॥ उपे गो य इ ल ज क ॥ की न ल्गो ली ल ण उ नि नि उ क ॥ भ री ता का क सू री
 त्रे ॥ ३१ ॥ त री उ द का सिं पा हि जे घ ट ॥ ते वी च मा के शि र मु नी ठ ॥ की अ प्री सि मु भा इ ए ॥ के वा क र्म यो ॥ ३२ ॥ जे जे जे जे हो य
 जें स्था थ ॥ सा स्ती ते चि सा ध न सु धा ॥ दे जा णो नि क र्म लि ध ॥ अ श म दर्प ण क र्म ति ॥ ३३ ॥ म दर्प ण क र्म यो क र्म ॥ ते क र्म नि स्व ये न
 ल ॥ ल यो नि ध य भ क्तो त म ॥ आ मा र म तो भा द्रा ॥ ३४ ॥ वा स ना ध रू नि वि ष यो वि ॥ प्री ति ज या सि क र्मि चि ॥ वां यो नि ये त्सा
 प ण ची ॥ म र्क वा नी मि रा शि ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥ व र्ण न्द्र पू व दे वा ई स य ज्ञां स्ता मु रा प्रिय ॥ य जे न रू ध्य ता मे ष का म दः क ल्य व ह
 व द् ॥ ३६ ॥ टी का ॥ र वी वि म्या व ण चि त् ॥ अ जि ते स्व लि मे क रू न ॥ हा क र त रू स मा न ॥ ऐ से आ प ण को डि नो ॥ ३७ ॥ श्लोक ॥ क
 रां ज्ञाने न प्री ण धं स रा स्ते प्री ण ये तु वः ॥ ल न धं पर मं स्ताने म न्यो न्य प्री ण ना स्ति रं ॥ ३८ ॥ टी का ॥ य जे क र ल दे व तो दे रो ॥

४

(5A)

तेषु कदेतीदृशपातोषं ॥ परस्परं भजाल रेसें ॥ म्याआदिपुरुषे बोदिले ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ इहादेवाः प्रहास्यं तं भोगानघाकृतवित्तः
 ५ तैर्दंशं स्तानरस्तेभ्यो रक्षाभुंके सतस्करः ॥ १२ ॥ टीका ॥ देवार्पणकरालदृष्ट ॥ देवाकृतिविजाभीष्ट ॥ देवासिनापि तीभीष्ट ॥ तेषा
 पितृलस्कर ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ हुतावशिष्टभो कारोमुकारकः सर्वपातकैः ॥ अरंसे नो महापापा आत्महेतोः पवतिये ॥ १३ ॥ टीका ॥ अ
 शशेषअन ॥ असे वितो कलुशदहन ॥ तेनेकेले पापप्रसवा ॥ करिभोजननापिता ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ उर्जो भवति भूता निदेवादेन स्य संभ
 वः ॥ यज्ञाद्देवसंभति तदुत्पत्तिश्च वै धतः ॥ १४ ॥ टीका ॥ अंन मये भूतेसमस्ते ॥ पर्जन्यास्तव अंनहोते ॥ अथास्तव अंनपदिते ॥
 कर्मयज्ञाते प्रसवे ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ ब्रह्मणो ह्यधुस्यनं महो ब्रह्मसमुद्भव ॥ अतोमते च विश्वे सिद्धि तं मां विधिभक्षिप ॥ १५ ॥ टीका ॥
 ब्रह्मापास्तनिवे भयोग ॥ अंतेवभुपा ब्रह्मसर्वा राप ॥ अतु विश्वमांसे अग ॥ हेमनगजयापरि ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ संसृतीनामहावकैः कामि
 तयं विचक्षणेः ॥ समुदाग्रीकने भूतेषु दिव्यक्रीडो धमोजनः ॥ १६ ॥ टीका ॥ कामसाधव क्रम्यहु ॥ इलेषिति महाभुभु ॥ गुकीजिक मेले
 बहु ॥ करणे सर्वयोगमाया ॥ ३३ ॥ श्लोक ॥ अंत्यात्मनि यः प्रीत आकाशमोदित प्रियः ॥ आत्मरक्षणरोयः स्यात्तस्यार्थी मेव वि
 द्यते ॥ १७ ॥ टीका ॥ जोप्रिय आपआपा ॥ पावलाभालवो धसुपा ॥ अतसं तु एवरेप्या ॥ तोडुलीकोणा अर्थासी ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ का
 र्याकार्य कतीनां सनेवाप्रोतिभुभाभुभे ॥ किं विदस्यनसा ध्येयास्तव जं तु सुसर्वहु ॥ १८ ॥ टीका ॥ योगासि कार्याकार्या ॥ शुभाशुभा
 भुभानोहे ॥ वासिअसा ध्यवस्तुकाये ॥ लो कूनयामधे ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥ अतोसकमयाहपकर्तमं कर्म जंतुभिः ॥ सको गतिमवाप्रो
 तिमासरोप्रोतिताटशः ॥ १९ ॥ टीका ॥ तस्माद्रहो निकर्मसक ॥ स्वधर्मराहुडतिजेनिस ॥ निष्कामजेमासभक्त ॥ मजपावतिमनि
 षु ॥ ३६ ॥ श्लोक ॥ परसांसिधिमापनाः पुराजिर्षकोहिज ॥ संग्रहाहिले कालोता ट्ठां कर्मचारभेत ॥ २० ॥ टीका ॥ एतेकश्यपा
 दिवराशर ॥ मजपावले स्वधर्मपर ॥ लोकसंग्रहाहिले कालोता ट्ठां कर्मचारभेत ॥ २० ॥ टीका ॥ एतेकश्यपा
 लोजनः ॥ मनुतेषु समाणंसतदेवानुसारस्यसौ ॥ २१ ॥ टीका ॥ तस्मात्त्वकर्मजइह ॥ तेअनुषिति श्रेष्ठ ॥ अमस्तांसितेचीवादा ॥ अपा
 नीरभोयासी ॥ २२ ॥ श्लोक ॥ विष्टमेमेनसाधो स्तिकश्चैरर्षेनराधिय ॥ अनालभ्यश्चलभ्ययः कुर्वे कर्मतथाप्यहं ॥ २३ ॥ टीका
 ॥ पाहोयाभपदि ॥ मजकायअसाध्य निजमति ॥ ऐसामीमंगले मति ॥ मास्तीहीरिती स्वधर्मि ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ नकुर्वे ह्यहाकर्मस्व
 तं कालसमावितः ॥ करिप्यंति मम ध्यानं सर्वैर्धर्माभ्यामते ॥ २५ ॥ टीका ॥ अभांवेमीतरी स्वतंत्र ॥ नकरिजेहं कर्मतंत्र ॥ मजआ
 ठविति प्राणिमात्रं ॥ दुकमोजनदभासि ॥ २६ ॥ मजदे विमीनिजधर्म ॥ लोकसीटि ति स्वकर्म ॥ धर्मयोगेदं टितम ॥ होयेदुगमिसंय
 म् ॥ २७ ॥ श्लोक ॥ अविष्यंति तन्ने लोकाउठिनः संग्रहाधिनः ॥ हंतास्यामस्यलो कस्यविधाता संकरस्य च ॥ २८ ॥ टीका ॥ जेहं ध
 र्मश्रेतेमेहउ ॥ जीमसेकाण्ठीरीबुडल ॥ हंम्याचिकेलेसाआत्म ॥ अरायेइलमजनि ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ कामिनो हि सदा कामैरज्ञाना
 ल्कर्म कारिणः ॥ लोकानां संग्रहायेतद्दिहं कुयार्दसकधीः ॥ ३० ॥ टीका ॥ कामिकसकामे कर्मै करिति ॥ अज्ञानआपुष्यनासती ॥

५

(6)

जनसंग्रहार्थयोगी आचरति ॥ सदां चित्ति निष्काम ॥ ५३ ॥ श्लोक ॥ विभिन्नसमतिजसा रज्ञानो कर्मचारिणां ॥ योगफलः सर्वक
 मधिपर्ययेन विकर्मकृत ॥ ५४ ॥ टीका ॥ पुंस्त्रीमकर्मकदिति ॥ ते बुडवाश्वास्वधर्मस्ति ॥ योगिकर्मैः प्रवृत्ति ॥ इच्छाधरितिमा
 शीत्ति ॥ ५५ ॥ श्लोक ॥ अविद्यागुणसाविद्याकुर्वन्कर्मण्यते द्वितः ॥ अहंकारान्तरुधिरहं कर्तेतियोज्वीत् ॥ ५६ ॥ टीका ॥ येद्विद्या
 गुणक्रिया ॥ होतीमास्वयेराया ॥ बुधिमंदज्ञाने प्रिया ॥ संपादि-त्याप्रतापे ॥ ५७ ॥ श्लोक ॥ यस्त्ववे सात्मनस्तसंविभागाद्गुणकर्म
 णोः ॥ करणं विषये रताप्रतिप्रज्ञानसंज्ञते ॥ ५८ ॥ टीका ॥ नैक्यमवस्तुप्रत्यय ॥ ते येनो हि प्रकृतिकार्थी ॥ मुखावर्तेऽप्यय ॥ योगी
 विदेहगुणसाही ॥ ५९ ॥ श्लोक ॥ कुर्वति सफलं कर्मगुणैस्त्रिभिर्विनीहिताः ॥ अविश्वस्तः स्वात्महो विश्वविनेव लंघयेत् ॥ ६० ॥ टी
 का ॥ अगागुणसंज्ञे मोहित ॥ ते विकर्मफलं जीत ॥ जैतानुधनसंज्ञत ॥ ते यतीतफलसंग ॥ ६१ ॥ श्लोक ॥ निखनैमित्तिकं तस्मान्म
 यिकर्मपर्येदुःखः ॥ यथाहं ममता बुधियदंगतिमशुभयात् ॥ ६२ ॥ टीका ॥ तद्विनिखनैमित्तिकादि ॥ आदिकरिक्वतिके ॥ मजअपितो
 मप्रानुके ॥ तं अरश्चके तु कसीत् ॥ ६३ ॥ श्लोक ॥ अनीयते मक्तिमंतो ये मया कर्मिदुःखं ॥ अनुतिष्ठंति ये सर्वं मुक्तास्ते रिक्वकर्म
 णिः ॥ ६४ ॥ टीका ॥ अमायाप्रहिगीता ॥ मनीजो देवम कर्ततां ॥ निखादि केऽनुचितो ॥ बावे निः संगता सर्वकर्मि ॥ ६५ ॥ श्लोक ॥ ये
 वै राना मु तिष्ठंति अशुभाहतचेतसः ॥ इर्ष्याणां मरुत्संज्ञानशास्ता निधुनेरिह ॥ ६६ ॥ टीका ॥ म्याजेने केदिते शास्त्र ॥ ते देवी
 जोअपवित्र ॥ अहमममाज्ञाना बु ॥ देशमात्रतपनेये ॥ ६७ ॥ श्लोक ॥ तुल्यप्रकृत्यां कुरुते कर्मयज्ञानवानधि ॥ अनुयातिवतामेवा
 यहस्तत्रमुपामतः ॥ ६८ ॥ टीका ॥ विवेको मिप्रकृतिसा रिखे ॥ नदांवेगा कौतुके ॥ येद्विदेहेभानुके ॥ अरस्यके काकावे ॥ ६९ ॥ श्लो
 क ॥ कामश्चैव तथा क्रोधास्वानामर्षेजुजायते ॥ नैतयो र्शतांयापारस्य विध्वंसकोयतः ॥ ७० ॥ टीका ॥ इद्विधाधीनकीचित् ॥
 होतीं चिथोरअमर्षी ॥ कामक्रोधकथितिघात ॥ आसिचित्तमदावे ॥ ७१ ॥ श्लोक ॥ शस्तोगुणे विजो धर्मः संगदव्यस्यधर्मतः ॥
 जिजेत सिन्धुतिः श्रेयोपरममयदः परः ॥ ७२ ॥ टीका ॥ आगास्वधर्मोकां कथिण ॥ परावाद्दरीव्याडुषण ॥ स्वधर्मउचीतमरण ॥
 नकोअनुज्ञानपरत्वे ॥ ७३ ॥ श्लोक ॥ करेण्डुआच ॥ पुमांश्चकुर्वते पापसहिकेन नियज्यते ॥ अहं ईद्विमेहेरं वरेवितः प्रब्रजदिव
 ॥ ७४ ॥ टीका ॥ वरेण्यसुणे गजानना ॥ पुसधासिनसतांसासना ॥ क्रोणकरी पापत्रेण ॥ कोरेचिदुनाहेरवा ॥ ७५ ॥ श्लोक ॥ श्रीगुणा
 ननु उवाच ॥ कामक्रोधात्महापापौ गुणद्वयसमुद्भवौ ॥ नयंतो वश्यतां लोका विध्येनोद्वेषिणोवरो ॥ ७६ ॥ टीका ॥ कामक्रोधदोषे
 जणाधुनाकेरजतमापाकन ॥ लोकांस्वरश्यनहोन ॥ शोरपतनयो जिती ॥ ७७ ॥ श्लोक ॥ आरज्योतिथया मायाजगद्द्वेष्येजं लंघया ॥
 वर्षामेघोयथाभानुस्तद्वकामो विनाशप्रहृ ॥ ७८ ॥ टीका ॥ जैसेमाये नैपउक ॥ आवरिहाभुमो ॥ कीमेघशाकाभानुमंड ॥ तेषं
 सकलकामक्रोधी ॥ ७९ ॥ श्लोक ॥ प्रतिपत्तिमतोज्ञानं कश्चित्सततद्विधा ॥ इच्छामकनतरसादुःखो ये ॥ अयता ॥ ८० ॥ टीका ॥ ननु
 हं बलं ज्ञानअच्छिमी ॥ सकलांते द्वेषिती ॥ इंद्विमेकेगेवअवति ॥ काष्ठस्तितीकद्विज्ञेसा ॥ ८१ ॥ श्लोक ॥ आश्रित्यशुधिमनसि

ननु

ग. गी. श्री. का. २

६

(७)

सखचनमानेना ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ श्रीगलाननउवाच ॥ अनेकानि च ते जमान्बतीतो निममापि च ॥ संस्मरेत्तानि सर्वाणि न कश्चि
स्तववर्तते ॥ ६ ॥ टीका ॥ मगवो देगलानन ॥ विष्णुसुखासीपुरातन ॥ हे भगवन्त्वं लक्ष्मण ॥ सखधानेकेग ॥ १४ ॥ अनेकजाना वि
कायंति ॥ तुजमजजादीयाभपति ॥ स्वायामजस्मरेती ॥ तुंभांतिनेणसि ॥ १५ ॥ श्लोक ॥ मतएव महाबाहो जाताविष्णुदयः सु
रा ॥ मयेवचलयंति प्रलयेषुयुगेयुगे ॥ टीका ॥ उदकापाकनिविधिरंग ॥ किं सिंधुपासुनिसरितोवोद्य ॥ नानासवपांवेन
ग ॥ दिसती विभागनिजडोकां ॥ १६ ॥ तैसेचमजपाकन ॥ विष्वाटिकरनिर्माण ॥ विष्णुमाज्ञे अंतःकरण ॥ चंद्रमामनवरेण्य ॥
॥ १७ ॥ ब्रह्ममाज्ञि बुद्धिजायं ॥ चित्तो स्वयेनारायण ॥ अहंकारगौरिरमण ॥ कुताशन निजमुख ॥ १८ ॥ अश्विनोदेव प्राण ॥
सूर्यमाज्ञेनयन ॥ दिशानेचिओत्रं स्तान ॥ जिह्वारुणपैना सि ॥ १९ ॥ सरयजमाश्याहति ॥ कुशीमाज्ञासरित्यति ॥ गोरान
र्मसदी भागीरथी ॥ नाडीहो तीर्थमाश्या ॥ २० ॥ हिमाचलविष्णुचक्र ॥ अरुणाचलवरुणाचल ॥ भरलसानुदोणाचल ॥ गाना
शेव्यजानुजंघा ॥ २१ ॥ नानादणआकितरुवरु ॥ तोमाज्ञारोमांवेकितारु ॥ अर्वाहंकरावरु ॥ पासीधारमजमये ॥ २२ ॥ जैसा
कीआवाविस्तार ॥ तोसकलतरुवरु ॥ पुनःसावसा विमधारु ॥ जाणअंतरविजावे ॥ २३ ॥ तैसेमजपासुनिसुरादिगण ॥ हो
तीयगायत्रिनिर्माण ॥ पुनःसावेमी विहती स्तान ॥ जैवेकवपासागि ॥ २४ ॥ श्लोक ॥ अहमेव परोब्रह्मा महाकरोह मेद
च ॥ अहमेवसगसर्वं स्तुकरं जगमंचयत् ॥ टीका ॥ मन्त्रब्रह्माज्ञान ॥ श्रीचिनानाभतावेगण ॥ अक्षरं जगमथोरलहण ॥
अतुरेपुतोहीमी ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ अजोव्ययोहं भूतात्मनादिभिरैकव ॥ आस्तामत्रियुवांमयो भराति बहुयोनिषु ॥ ६ ॥
टीका ॥ मजजमनां हि निजव्यय ॥ भूतात्मनि विदेह ॥ अनादि श्रीभगवन् ॥ यदुपो श्रीर्षमी ईश ॥ २६ ॥ परंतुमायायुगा
स्तवामी दिक्षेसगुणसावेव जैसास्फटिकावास्त्रनि ॥ रंगेजमित्तवभेदजा ॥ २७ ॥ तैसेमाज्ञेअवतार ॥ अथाभमनेअवा
रा ॥ जैसिकृष्णदिसेगार ॥ परतेनीरजीपटवी ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ अधमेक्ययोधर्मापचयोहि यदाभवेत् ॥ सासुसरसितुं
ष्टास्तदासुंभरास्यहं ॥ १० ॥ टीका ॥ जैदाधर्मासजधर्म ॥ विष्णुकीजधम ॥ तैहीमजपोहंपनाम ॥ कागेवर्मजकेदे ॥
॥ २९ ॥ निजजमांजमधरि ॥ साधूरुमीनापरि ॥ उवाचासंसारकरि ॥ परोपरीमी भयाका ॥ ३० ॥ श्लोक ॥ उच्छिद्याधर्म
निकयं धर्मं संस्थापयामि च ॥ हस्त्रिदुष्टं श्रदे संश्रानानपरीदाकरोमुच्यते ॥ ११ ॥ टीका ॥ सगजधर्मी चकावेपसा ॥ उदावया
मीसहसासा ॥ धर्महंसावापस ॥ तोमीदधूरुहीतो ॥ ३१ ॥ म्याजापुलेभतरुसावे ॥ नामातुं देसमावदे ॥ म्याससुसैरेका
वे ॥ जिवेभवेभयांसि ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ वणाश्रमामुनीसाधुस्यालयेवदुरुपटक ॥ एवयोवेतिसंभतिर्ममदियायोसुगे ॥ ३३ ॥
टीका ॥ मुनीतं पाकांवे ॥ साधुजनासाभाकांवे ॥ वदुरुपम्याधरांवे ॥ उधुरांवे भौव्यांसि ॥ ३४ ॥ यावागि निजवतरे ॥ रूपध
रनिजो जिते ॥ हेतुजापागनिधरि ॥ निजकारेयुगायुगी ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥ तत्कर्मचवीवेचमरूपेसमासतः ॥ सकारंममतातुंधि

६

(7A)

ननु नर्कस जायते ॥ १३ ॥ टीका ॥ ऐसि दि अज न कर्म ॥ मा सि दि अज न कर्म ॥ म्या निज वी र्य पु र षो त मे ॥ के ले क र्मे नि वे हिं ॥
 ॥ ३५ ॥ सा गो त म चं घ रि वा भा त ॥ म्या भ लि क अ ट यो त ॥ पु का चं अ ट यो त ॥ तें हं इ श क र्म ही य ॥ ३६ ॥ जन का चि या धा
 न्या चे ॥ म्या मा र्के क र्मे सा चे ॥ शी रे वी पु र व दि ले वै रे व ना चे ॥ तें आ सु चं भो ज न ॥ ३७ ॥ पा हें पां थ्या सा चे ॥ मो द क र्मा सि ले मा ति चे ॥
 वि ष या सि ले म्या भ का चे ॥ न र के श री चे म्या रा था ॥ ३८ ॥ पा हें पां थ पं टी का र यो ॥ म्या वि क ट रू प ध र यो ॥ मो द क र्म सि ले उ भ्या ने ॥
 म ज वि धि ने र ने उ सी ले ॥ ३९ ॥ क्री ड क र्म तें जी व ति ॥ भ ज ने ले शे क र्म म्या नि ॥ म्या शो पा सि क र्म क र्म नि ॥ स र्व भू षो वि रा जें ॥ ४० ॥
 मा गे ग डी रा हि ले ॥ ते भ ग स्म रे सं ङ व दि ले ॥ ते अ हो म्या र सि ले ॥ रू प ध रि ले आ पा क ॥ ४१ ॥ त्या मा मा ता का र यो ॥ म ज का क र्मे घ रि
 हो यो ॥ अ ह्यो ने ग र्व के उ म ने ॥ त्या सि दा व यो अ धो उ ॥ ४२ ॥ पा हें पां सि ध र खे ॥ दे व घा त ले वै दि शा के ॥ म्या सो वि ले स्व शी ले ॥ म
 री उ च सि ले को सं ने ॥ ४३ ॥ सिं धू ची से ना भ ये क र ॥ जे यो जिं कि ले वि त र ॥ ते धे म्या मु का हा ती द भो कुर ॥ इ उ नि से हार क र वि ला ॥
 ॥ ४४ ॥ पा हें पां म र्दे चा को ध ॥ ते धे ग हि ले मी चि जंग ॥ पा वा ण स र्के म से अंग ॥ जाले अ र्थ ग म रू प ॥ ४५ ॥ ऐ सी मा म्नी च रि तें
 ॥ अ सं ख्य दि अ वि चि त्र ॥ ऐ वें भू वा प्र व पा मा त्र ॥ स स गे नै प वि त्र ॥ ४६ ॥ सो पु न म म ता अ हं ता ॥ जो मं से ऐ ख्य र्ज या ण ता ॥ तो मा
 म्ना भ क पं धा ॥ भू पा स र्व धा स जी मा ॥ ४७ ॥ जो हो य न ज मो ह ग ॥ जा सि ज न म र्सा चा र रा रा ॥ का य स्स र्प पुं दे आं धा रा ॥ भू वा
 धा रा हो इ उ ॥ ४८ ॥ श्लोक ॥ निरी हा नि र्भ या रो धा म स र म घा पा श्र या ॥ वि ज्ञान त प सा श्र धा ज ने के मा नु पा ग ता ॥ १९ ॥ टी
 का ॥ जे इ ठे सी वि स्म र जा ले ॥ नि र्भ र वै म ज मो ह र ले ॥ नि क्रो भ हो उ नि ठे ते ॥ ते पा व के सा यो ज्य ॥ ४९ ॥ जे वी ज्ञान म र्ति मं ता ॥
 ते ल चो ते जा चं आ दि ष ॥ जे उ ध त ल व त ॥ ते नि श्चि त म रू प ॥ ५० ॥ श्लोक ॥ ये न ये न दु भा वे न सं से रं ते न रो त ना ॥ वि र्मि
 स व स म सु भ अ ने के मा नु पा ग ता ॥ ५१ ॥ टीका ॥ त वा त म्या फ ले ते म्या ॥ प्र य ण म्य य य ॥ स्फु ट ॥ ५२ ॥ टीका ॥ जे जे से भू उ
 ति ॥ ते तें ते सी फ ले पा व ती ॥ जे से धा म्य पे रि जे से ती ॥ ते से धे ता ते यि क ॥ ५३ ॥ श्लोक ॥ ज न स्फ र ति ते र ज न म म मा गे नु
 या चि न ॥ त ये व य व हा रं ते से षु चा ये पु कु र व ते ॥ ५४ ॥ टीका ॥ यो लो को नि मा भि न्न म ती ॥ जो ना का म ना कां स्ति ती ॥
 ते स्या ते स्या धा र ति ॥ भे र वि ति अ ने क ॥ ५५ ॥ श्लोक ॥ कु रं वि दे व ता श्री स्त्री वां चं त ॥ क र्म यो फ ले ॥ प्रा पु वं ती ह ते ले
 के सा प्र सि धिं हि क र्म ज ॥ ५६ ॥ टीका ॥ ये क ज्ञान स तां पार्था ॥ भे दे च भा वी ना ना दे व ता ॥ या सि त का म का म
 अ पि तां ॥ प्र से न ता क र्मा ची ॥ ५७ ॥ अ रि सं जे रा वि ले ॥ ते चि ते धे बि ब ले ॥ जे से क र्म कां जि ले ५ ते से नि प
 ज ले फ ल भ वा ॥ ५८ ॥ श्लोक ॥ चं क रो हि म या व ण र ज ॥ स ल त मो शा त ॥ क र्मो शा त श्रु त स्स षा म्क
 लो के म या न प ॥ ५९ ॥ टीका ॥ अ ग्रा हे चा रि क णी ॥ गु ण स्त व ति मि ले आ प य ॥ क र्मा चे भा ग भि न ॥

७

(४)

तेषामिन्द्रो निदिधने ॥ ५५ ॥ तिनयुष्मा आरिबर्षा ॥ स्यान्ने ऐकपांलक्षण ॥ स्वस्युपों ब्रह्मजाण ॥ स्वाधजाण बाहुज ॥ ५६ ॥
 तमरजनिजो न ॥ होताहं वैश्यवर्षा ॥ निरुक्तो तमोयुष्मा ॥ तेलक्षण भद्राचे ॥ ५७ ॥ श्लोक ॥ कर्त्तारमपिमांतेषाम कर्त्तारि वि
 दुर्बुधाः ॥ अनादिर्मन्थरं निरुक्तमिन्द्रं कर्म जैरुणेः ॥ ५८ ॥ टीका ॥ अग्निं संगे घडे नो हो ॥ परिअग्निं द्विस्तसापयो ॥ ये क
 ही घृणात्वाधावो ॥ निजांगी ये उनेदी ॥ ५९ ॥ टीका ॥ खये न घडे ॥ भूपाभते स्वतां उडे ॥ तैसे कर्त्तुमज कडे ॥ ये उ निजुडे परि
 ताहि ॥ ५९ ॥ प्राणित्यनिरंतर जलित ॥ असोनयुष्मा कर्माता ॥ जैसे पत्र पत्रजटां त ॥ विसर्वगत अंबर ॥ ६० ॥ स्वर्गकांतिस्व
 र्थं हि रजि ॥ यं बुभुषागादिस्वा पासनी ॥ होती तक्षणी अलिस ॥ ६१ ॥ तैसामी कर्त्ता अकर्ता ॥ हे जापाती साधत कृता ॥ गु
 ५ ताको क प्रगठ वदि ॥ ६२ ॥ हा कर्मा अवरत्ना ॥ माध्याभाषां त्या जाभ्यां ॥ ६३ ॥ श्लोक ॥ निरीहं यो मिजानाति कर्म वधाति
 जैवर्त ॥ चक्रुः कर्माणि बुधैवं सर्वं सर्वमु सुवः ॥ ६४ ॥ टीका ॥ निमिः संजो जाणेस ॥ स्याचे कर्म पारा तुयतीस ॥ की अकर्त्तु कि
 वळ ॥ कर्मम व मनो हि ॥ ६५ ॥ ऐसे बमज जाणोन ॥ पुर्वीक मुमुक्षुणा ॥ यानि किंते कर्म चरण ॥ जैसे कृष्ण भजत ॥ ६६ ॥
 श्लोक ॥ वासनास हिता द्यासं सार कारणा द्या ॥ अज्ञान व धना न तु बुधा ये मुच्यते खिता ॥ ६७ ॥ टीका ॥ द्यास
 ने च धन ॥ असोनसे जै कर्मा चरण ॥ ते व संसारा चै कारण ॥ जग मरण सुटेना ॥ ६८ ॥ अज्ञान तें व धन ॥ ज्ञान तें मुक्तपण ॥
 हे पावे जो प्रितरुण ॥ तो विधन्य वरेपया ॥ ६९ ॥ श्लोक ॥ तं कर्म च कर्मापि तथयाम्य कनात व ॥ यत्र मौने गता मो हा द
 ष्ये बुधि शाहितः ॥ ७० ॥ टीका ॥ कर्म कर्म लक्षण ॥ तुजमी सामतो आपण ॥ स्यान्ने कर्त्तारि वरण ॥ पडि के मो न्यस ज्ञाना
 ॥ ७१ ॥ श्लोक ॥ तं मुमुक्षुणा जै कर्मा कर्म निरुपां ॥ निमि धानी हि कर्माणि सनि निजां गतिः प्रिय ॥ ७२ ॥ टीका ॥ ये का
 र्त्ताम कर्म ॥ हुजय चै नाम अकर्मा ॥ ती पाचे विक्रम ॥ रसे कर्मा त्रिध ॥ ७३ ॥ श्लोक ॥ क्रियायाम क्रिया ज्ञान मक्रियायां
 क्रिया मतिः ॥ यस्य स्यात्स हि मर्त्ये सिंके रे मुक्तो र्विवा र्थकृत ॥ ७४ ॥ टीका ॥ जो क्रिया करि समस्त ॥ जे जें अविजिने क
 र्त्ता ॥ तो क्रिये मुनि परता ॥ जैसा सविता जयंत ॥ ७५ ॥ न करु नि यो स्व कर्म ॥ जणे तो हे चै कर्म ॥ स्यान्ने कर्म ते अकर्मा ॥
 अंधतमतो पावे ॥ ७६ ॥ निखाचा कंजो साग ॥ करणे तो विअत्याग ॥ जै कर्मा चै कर्म साग ॥ परी तो निः संग सर्वदां ॥ ७७ ॥
 श्लोक ॥ कामो कुर विधो गेन ॥ यः कर्माप्यार भेन्नरः ॥ तत्तु दर्शन निर्दग्ध क्रियमाहु बुधा बुधं ॥ ७८ ॥ टीका ॥ जैसे काच का
 च मन ॥ सर्वदा से कल्प भव ॥ तैसे साधका चै कर्मा चरण ॥ हतु विहीन आरिभा ॥ ७९ ॥ स्वप्नी चे जन मृत्य ॥ अथवा सुकृत
 उपकृत ॥ अब घें होय मिथ्या भत ॥ हो तो जायत वरेपया ॥ ८० ॥ अज्ञान सुपुली घन ॥ विपरीत ज्ञान स्वप्न ॥ प्रगटतां ज्ञान भा
 न ॥ जाती सावळो नीदी घे ॥ ८१ ॥ श्लोक ॥ फलत छा विहाय स्यात्सदा तसो विसाधनः ॥ उघो तो वि क्रियां कर्तुं किंचि नैव

७

8A

करो तिसः ॥ २६ ॥ टीका ॥ कश्चात्कृती दुरी ॥ निराश्रय जो अंतरि ॥ उद्योग करुनी लोकर्म करी ॥ मोसंसास अस्तोनि नाहिं ॥
 ॥ ७ ॥ ॥ विरहस्ये आरंभिले ॥ त्रेककांही बनाही केले ॥ परिजगासिउपेगा आले ॥ देहे बाडे प्रारब्धे ॥ ७ ॥ ॥ श्रीक ॥ निरीहो
 निरहोतातापरिसकपरिश्रमः ॥ केवलं वेग्रहं कर्माचरं नायाति पातककं ॥ २ ॥ टीका ॥ नीरापे धूनेनुनी मन ॥ परिश्रहानीरा
 मिमाने ॥ क्रियाजे देही उसन ॥ तेदिशि मुणजे ठांगी ॥ ७ ॥ ॥ देवतेने नांजन ॥ एकते श्रवणभूषण ॥ क्रिययोगते करणे ॥ ते
 आभरणतेथीचे ॥ ७ ॥ ॥ जेजे पाद कासिभटे ॥ तेअमीह निप्रगटे ॥ क्रियेकेली आत्मनिष्ठे ॥ तेंतें उठें ॥ श्रीक ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ऐशानि
 ही धापुटे ॥ पावकभाय बाउडे ॥ कायजांधारे स्वर्गपुटे ॥ बाडे कौडे येउंश के ॥ ७ ॥ ॥ श्रीक ॥ अहं होमस्वरोभूत्वा सिध्यति ध्योः स
 मश्रयः ॥ यथाप्राक्षीहसंगुष्टः कुर्वकर्मैतद्यथा ॥ २ ॥ टीका ॥ निरुद्ध आत्मनिर्म उर ॥ निःपापजो निरंतर ॥ वस्तुसाधा
 क्यातसर ॥ तोसा चर निजयोगी ॥ ७ ॥ ॥ यथाप्रीतीने संतुष्ट ॥ प्रारब्धो धेसी दुष्टानिष्ठ ॥ नेमनि सत्त्वे सौख्यकष्ट ॥ तोसुवी
 टसर्वी सि ॥ ७ ॥ ॥ श्रीक ॥ अखिलै विष्ये मुक्ती ज्ञान विज्ञानवानपि ॥ यथाश्रंतस्य सकल कृतं कर्म विधीयते ॥ २ ॥ टीका ॥ ज्ञा
 नविज्ञानसंपन्न ॥ तोमुक्त विषयापासन ॥ यथाश्रंसावेकर्मचरण ॥ त्रियली न्यामध्ये ॥ ७ ॥ ॥ आकाळीची अत्रे आळी ॥ ती
 नवर्षतां विगेली ॥ तैसा कर्मने कर्म्या आळी ॥ नाही आशी कर्मेश ॥ ७ ॥ ॥ श्रीक ॥ अहमप्रिर्हि विहो ताहुतं यम्ये वापिर्ता ॥
 ब्रह्मात्मयं च तेनाय ब्रह्मण्येवय तोरतः ॥ ३ ॥ टीका ॥ अमी भिरोता हुत ॥ हविष्मी मरुपित ॥ यज्ञापासन कळप्रास ॥ तेसतंत
 मिशया ॥ ७ ॥ ॥ एवं यज्ञकर्म आपवे ॥ निस्त्रिय उ पते स्वभावे ॥ आत्मप्रतीति वैभवे ॥ कर्म उलोवे बलीची ॥ ७ ॥ ॥ श्रीक ॥
 योगिनः केचिदपरे दिष्टं यज्ञं वदंति वै ॥ ब्रह्माग्नेयं यज्ञो वै इति केचिन्मते सिरे ॥ ३ ॥ टीका ॥ नानामते नानायाग ॥ तैसाने द्वयो
 गीसंग ॥ ब्रह्माग्नीसो ज्वळज्वंग ॥ बुधादी संगतां प्रिती ॥ ७ ॥ ॥ श्रीक ॥ संयमाग्नौ परे परं द्विषापुपुजु कृति ॥ स्वप्रिष्ठ
 न्येत द्विषयाशुशुधादीनुपजु कृति ॥ ३ ॥ टीका ॥ कोणीयेके इ द्विषाचे प्रभाव ॥ आयरुनि पां हि सर ॥ सणती हायत सावेव ॥ ध्या
 वेनो व संयमाग्नी ॥ ७ ॥ ॥ येक प्राणायाम पर ॥ बुधी करु निये काग्र ॥ सृणती योगयतसार ॥ निरंतरतं निष्ठ ॥ ७ ॥ ॥ श्रीक ॥ इये
 षतपत्ता बापिष्ठा ध्यायेन विवेचन ॥ ती ब्रह्मतेन यतिनो ज्ञानेनापियजंति मा ॥ ३ ॥ टीका ॥ ४ प्राणानामि द्विषायांच परे कर्मा
 णिकुल्लशः ॥ त्रिजात्मरतिरूपे यो ज्ञानदी से प्रजु कृति ॥ ३ ॥ टीका ॥ ये क आत्मरति भाठि ॥ केली अज्ञानाची होळी ॥ हाबुधि
 यज्ञ ब्रह्मसुकाळि ॥ सपां पाठिं विरकां ॥ ७ ॥ ॥ इत्यावास इय करणे ॥ तोमी इयय हुतये ॥ नानाप्रते नेम भरणे ॥ तोपु जाणेत प
 यज्ञ ॥ ७ ॥ ॥ वेदशास्त्रपुराण ॥ अथ समाज्ञानो माचै पठण ॥ तोहावाय हुजापा ॥ परमपावन वरेव्या ॥ ७ ॥ ॥ ४ ॥ ती ब्रह्मतेनेय
 जिति ॥ साधितीजे आत्मरति ॥ तो आत्मयोगस संप्रति ॥ श्री उजगती तोयोग ॥ ७ ॥ ॥ हरकउ ध्वने ति ॥ रेचकने उतर ति ॥ दो

१० गी टी प्रा ३

८
(१)

हिते हिरो प्रिति ॥ ते निज व्यक्तिकुं भावि ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ प्रायो प्रायं हथा प्राण मयाने प्राप्ति पंतिये ॥ रुधा गती श्चो भयो स्ते प्राणा
यामशो तानरा ॥ ३५ ॥ टीका ॥ नाना यत्न रत भाविक ॥ यत्न विमुञ्चते तं पातक ॥ ते पावती अहनि संक ॥ जो सा हि कये के निष्ट ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥
जि ता प्राणा प्राण गती रूपक दृष्टि ते पुन ॥ एवं नाना यत्न रत यत्न संसित पातका ॥ ३६ ॥ टीका ॥ मशा सि जो वि मुख ॥ सा सिना
हि इ ह लो क ॥ तै ये कै वा पर लो क ॥ अ वि वे क क रु जे ॥ ३७ ॥ टीका ॥ कायी क तो त पयत् ॥ वा ने वा वे गे इ ॥ पु क्षि वा ज्ञान यत्न ॥ वि नि ध य इ वे
दो क ॥ ३८ ॥ श्लोक ॥ नि सं ब्र ह्म प्र यां ये ते म जुरो वा म् ता शिनः ॥ अ यत्न को रि णो लो को क म म न्यः कु तो भ वे द ॥ ३९ ॥ टीका ॥ तै व
ज्ञ क्रिया स फ ले सि ॥ आत्माना त ले ति सि ॥ ऐ सा जा जो नि अन या सि ॥ प द का सि अ वि ना श ॥ ४० ॥ टीका ॥ इ या दि ना ना या ग ॥ दे ति
भू वा वि वि ध भो ग ॥ परि तान या गा हु नि वां ग ॥ पु जा नि सं ग ज से ना ॥ ४१ ॥ श्लोक ॥ का यि का दि जि भा भू ता म् ज्ञाने दे प्र ति षि
ता न ॥ ज्ञा ता तान वि ज्ञान रू प मो ह्य से वि ल बंध ना ते ॥ ४२ ॥ टीका ॥ स्वी ज्ञान सा ध ना वै का र ण ॥ क ले ना सा ध ना वां तु न ॥ या
वी ण जे जे सा ध न ॥ तै ते ज्ञा णा भ व म् क ॥ १०० ॥ टीका ॥ ज्ञा ला गि ज्ञा सा सि ता न ॥ पु त्र त्वे भे द स ज न ॥ मि र न ये शा ता ण प ण ॥ प टी ली
न अ सा वै ॥ १०१ ॥ श्लोक ॥ सर्वे धां भू प य ता नो ज्ञान यत्नः परो मत ॥ अ वि के ली य ते क र्म ज्ञाने मो ह्य स्य सा ध ने ॥ १०२ ॥ टीका ॥ का
या वा वा म न ॥ इ हि क री वै त्या चि भू ज न ॥ सं त मूर्ति ज्ञान घ न ॥ प रि त पा व न द या कु ॥ १०३ ॥ टीका ॥ ना ना सं ग ध रि तां ॥ न स रे सं सा र द य ॥ जे
सं दु प ध्य वर्त तां ॥ अ रो ग्य ता पे ई ना ॥ १०४ ॥ श्लोक ॥ त इ सं दु प ध्य प्र प्र भे न नै ति हः स ती ॥ शु क् र य वा व दि ध्यं नि सं त म्हा ल वि शा र
दः ॥ १०५ ॥ टीका ॥ अ स त्सं ग वा ध क ॥ तो नै दु बंध मो ब क ॥ स त्सं ग क र द रा य क ॥ ना शी अ ने क वा प द ॥ १०६ ॥ श्लोक ॥ ना ना सं ग
ज नः कु र्व नै कं सा क स मा ग तं ॥ करो ति ते न सं सा रे बंध नं सु पु ये ति सः ॥ १०७ ॥ टीका ॥ स त्सं गे इ ह पर त्र ॥ प्रा स ख ही त स्व तं त्र ॥ स
ल सं ग तो अ प वि त्र ॥ उ र् ल भ प वि त्र स ज न ॥ १०८ ॥ श्लोक ॥ स त्सं ग ज न सं भू ति रा प दं ल य ए व च ॥ स हि तं प्रा ष्य ते स वै रि ह लो
के पर त्र वा ॥ १०९ ॥ टीका ॥ स त्सं ग व स्तु प्रा स हो भ ॥ स ह ज चि भे रा बा ल य ॥ म ग सर्व भू र्ती अ ह्य ॥ व स्तु वि न्म प पा ह ती ॥ ११० ॥ टीका ॥
श्लोक ॥ इ त र स्तु ल भं र जं स त्सं गौ ती व डु र् ल भः ॥ य ज्ञा सा न पु न र्बं प मे ति जे यं त तो य तः ॥ १११ ॥ टीका ॥ म ग भू पा वा ष णं च ॥ ज्ञा
पा ते ज्ञान कुं भो इ व ॥ प्र थ मा च न नी के श क ॥ ज्ञा ला अ भा व डु रि तां वा ॥ ११२ ॥ टीका ॥ अ ज्ञान डु रि ता च क ॥ सा सि ला ग तां ज्ञाना न च ॥
सा स हो ती वै रा ग्य अ नि च ॥ करी ता का क भ स्मा डि ॥ ११३ ॥ श्लोक ॥ त तः सर्वा पि भू ता नि स्व ष्य ये वा पि प श्य ति ॥ ज
नि पा पर तो जं तु स्त त स्त स्मा अ मु च्य ते ॥ ११४ ॥ टीका ॥ जै से सं दु ल का ए भा र ॥ जा वां यो स प्र ग्री वा र ॥ तै से ज्ञा ना हु नि प
वि त्र कर ॥ हु जे सं सा र ज से ना ॥ ११५ ॥ श्लोक ॥ द्वि वि धा न्य वि क र्मो नि ज्ञाना ग्नि र्द ह ति शू णा क ॥ प्र सि धो प्रि र्य था व र्ब भ स्म
ज्ञान य ति स्तु या त ॥ ११६ ॥ टीका ॥ योग व के प्र र ति ॥ जे हं सा रि ली परी ती ॥ द द अ भ मा सि मा सि भ कि ॥ ते पा व ती हं ज्ञान ॥

८

(9A)

॥११०॥ श्लोक॥ न ज्ञान समतामेति पवित्रमितरं यथा॥ आत्मन्येवावगच्छंति योगात्कालेन योगिनः॥ ४६॥ टीका॥
ज्ञानं कैवल्याप्राप्तं॥ जेभक्तिमार्गद्विषित॥ ते संशया र्थवीकृतत॥ जन्मावर्तभोगिति॥ १११॥ श्लोक॥ भक्तिमानि द्विषजयी
तसरो ज्ञानमा मुयाद॥ उवा तस रमो स्तं स्व स्व कालेनया ससौ॥ ४६॥ टीका॥ संशयात्मकप्राप्ति॥ व्यासिद्वेनापरत्र
दोडी॥ वेदिसंपतिआजिजनी॥ मां हि असोनी संसारि॥ ११२॥ आत्मज्ञानरतजाता॥ तो भवार्थावतरजा॥ सायो ज्यप
रपावजा॥ प्रजमानो तोयेक॥ ११३॥ श्लोक॥ भक्तिहीनो प्रधानः सर्वत्र संशयी तु यः॥ तस्य शाना विद्विज्ञानं हलोकेन
वापरे॥ ४६॥ टीका॥ लज्जो निहायोगमार्गार्था॥ अनदेनाकतां॥ केत्याकर्मा विअपधता॥ वैसेमाथा संशया॥ ११४॥
श्लोक॥ आत्मज्ञानरतज्ञाना शिताखिल संशयी॥ योगात्साखिलकृमाणी बध्तिभरपतानिन॥ ४६॥ टीका॥ भाग्युद्धि
नाहति॥ ज्ञानरतधरु निभरपति॥ जना चीकरीशांती॥ जे संसृती दोखनी॥ ११५॥ श्लोक॥ ज्ञानरतद्रु प्रहरेषा संभृत
मज्ञ ताबलाद॥ छिंतातः संशयंतस्मायोगकृको भवेनरः॥ ५०॥ टीका॥ ज्ञानरतद्रु संशय॥ छिदुनीहोयेअथय॥ योगयुक्ता
सिनो हे धिया॥ को जे जममयजहले॥ ११६॥ गणेशदा संभयो संति॥ अवधानघां वेणुदति॥ संन्यासयोगास्थिति॥ यथा
मतिवर्जिता॥ ११७॥ इती श्रीगणेशगीताभाष्य॥ मुमुक्षुकाची गाय॥ लमपानक रितां पुराया॥ त्रिसोयदृधरु॥
॥११८॥ ॥३०॥ तसदि ति श्रीमद्गणेशगीतासु परिषदर्थ॥ मिसिगो गतशास्त्रे श्रीमद्भागवतपुराणो ज्ञानन
वरेण्यसंवादे प्राकृतकारटीका योत्रलार्पणवी गौनामहती यो ध्यायः॥ ॥ जयजयसद्गुरुविष्णुहरा॥ जयजयसद्गुरुवरा
सरा॥ जयजयसद्गुरुविदां वरा॥ वराचरारसका॥ १॥ अज्ञानं विप्रभोर॥ भावाकरिसि संहार॥ यालागिहा विष्णुद्वार॥ नामसा
कारयुतुसे॥ २॥ ततीयाध्याई ज्ञानयोगा॥ तुंवांड परिशिलासाग॥ तेसे विनानायागा॥ तेह वांग वोलिसे॥ ३॥ लज्जो मोरजारं का
युक्त॥ देवासिनमता प्रार्थित॥ तेजाणावमासमर्थ॥ सर्वमतं सर्वता॥ ४॥ वैरेण्यउ वाचे॥ सन्यस्तश्चैवयोगश्चकर्मणोवर्ष
तेन्या॥ उभयोर्निश्चिंतं वैकं प्रयोषद्दमेप्रमो॥ १॥ टीका॥ वैरेण्यलयोगज्ञानना॥ वोलसि वैधसंन्यास लसणा॥ भ्याअं गि
कारावें कवण॥ ठपाघ नासीगावें॥ ५॥ श्लोक॥ श्रीगणाननउवाच॥ क्रियायोगदियोगश्चुभौ मोक्षस्य साधने॥ तयोर्धिये
क्रियायोगस्यागतस्य विशिष्यते॥ २॥ टीका॥ गजाननजयोंवार्था॥ वैधसंन्यासउभयतं॥ मोक्षदेति सर्वथा॥ परिष्कर्मताक
प्रयोगी॥ ६॥ जेसिनो कालो पिसक का॥ येका सिची वराभोयका॥ वैधयोगश्चोभ्यांसा॥ उयेगीजा उभवाणची॥ ७॥ श्लोक॥
इंदुःखसहो देहायोनसाक्षति किंचन॥ मुच्यते वैधनात्सर्धो त्रिसंन्यासवान्कृत्वं॥ ३॥ टीका॥ कर्मनिष्ठपरिसंन्यासि॥ जोको
पातेही नहेकी॥ इंदुअप्रारध्यासि॥ इदमानसिनैरुश्रय॥ ८॥ तोसकक कर्म करि॥ वैधनासेयहदारि॥ इष्टदिसेज अंशरि॥

१० गी. टी. प्र. ४

3

(10)

परिवेगमचिह्नं ॥ ५ ॥ श्लोकः ॥ वदंति भिन्नफलकौ कर्मणास्याग सं ग्रही ॥ मन्वाव्यज्ञास्तयोरेवं संयंतीत विचक्षणः ॥ ५ ॥ टीका ॥ कर्मणो
गजाविसंन्यास ॥ मन्वरे रोक्यतिथास ॥ एकप्रतिज्ञानीयोस ॥ भेदव्याप्तीदृसेना ॥ १० ॥ श्लोकः ॥ यदेवप्राप्यतेसपत्तदेवयोगतः
फलं ॥ संग्रहं कर्मणो योगं यो विदति स विदति ॥ ५ ॥ टीका ॥ संन्यासयोगे जे प्राप्स ॥ ते वि कर्मयोगासिहोत ॥ दोहीचे योगतल ॥ हेजापा
तोचिज्ञाता ॥ ११ ॥ श्लोकः ॥ केवलं कर्मणा न्यासं संन्यासं न विदुर्बुधाः ॥ कुर्वन्निष्ठया कर्मयोगी जले बजायते ॥ ६ ॥ टीका ॥ क
र्मयकुनिल्लणो संन्यासि ॥ नटलणावेतयासि ॥ निःकामजमानसि ॥ तोमनासि तु ठेना ॥ १२ ॥ श्लोकः ॥ निर्मलेयतचित्तात्मा जित्तो
योगतत्परः ॥ आत्मानं सर्वभूतस्थं पश्यं कुर्वन्निष्ठिते ॥ ७ ॥ टीका ॥ जो निर्मलचित्तनियतात्मा ॥ जि कुनियो रिपुशामा ॥ योगसाधुमी
भोगीप्रहिमा ॥ तोजात्मापैमाज्ञा ॥ १३ ॥ श्लोकः ॥ तत्र विद्योमिदं कृत्वा कर्मातीतमभ्यते ॥ एकादशमीदृश्यामि कुर्वेति कर्मसंख्या
॥ ८ ॥ टीका ॥ तत्रवेलाकर्मचरण ॥ करुनियो निरभिमान ॥ जेजेनिये रं दियांपाकन ॥ माथा आपयातेनघे ॥ १४ ॥ श्लोकः ॥ तत्सर्वमर्प
येद्वृत्तप्यपिकर्मकरोति यः ॥ नक्षिप्यते पुण्यपापैर्भातुर्भातुर्यथाश्रितं ॥ ९ ॥ टीका ॥ वेलेकर्मजलापणा ॥ होताचिस्वयेअलिस्पर्णा ॥ न
रगे आंगीवापुष्य ॥ जैसापनुनिराका ॥ १५ ॥ श्लोकः ॥ काथिकं वाचिकं बौद्धं दिव्यं मानसं तथा ॥ त्यक्त्वा शकं कर्म कुर्वेति योगशास्त्रित
सुधये ॥ १० ॥ टीका ॥ काथिकवाचिकमानसिद्ध ॥ कर्मी जमजं निसनेपियक ॥ आशांते जिताशोधक ॥ होयेचोखचितासि ॥ १० ॥ श्लोकः ॥
योगहीनो नरः कर्मफलं हयाकरोत्यलं ॥ बध्यते कर्मबीजे सततो दुःखं समश्रुते ॥ ११ ॥ टीका ॥ योगहीनकर्मसुखर ॥ फकाशासेस्त्रिो
तसर ॥ वेधनवावेसाचार ॥ निरंतरतो दुःखी ॥ १२ ॥ श्लोकः ॥ अनसासकलं कर्म सांगी योगी सुखं वसेत् ॥ न कुर्वन्कारयवापि देव्य
भ्रंरूपतने ॥ १३ ॥ टीका ॥ कर्मफलासिते जे ॥ तोचिज्ञापासुकिमासि ॥ सर्वज्ञिमाहोयसहजी ॥ घेघेचकर्मकीममत ॥ १४ ॥ श्लोकः ॥
नञ्जियाबचकलं कस्यचिह्म ज्यतेमया ॥ नञ्जियावीजसंपर्कः शक्यात् नञ्जियतेखिले ॥ १५ ॥ टीका ॥ आत्प्रशाक्तीनेसकठ ॥ जपनिर्म
तोमीकेवठ ॥ कटलक्रियाबीजवठ ॥ हेकोणाचेनकरिमि ॥ १६ ॥ श्लोकः ॥ कस्यचिसुष्ययापानिनस्यशापि विमुर्तप ॥ ज्ञानरूबवि
मुर्धति मोहेनादतबुधयः ॥ १७ ॥ टीका ॥ कवयाविचापुष्यपापा ॥ मिनासिपेगाभवा ॥ ज्ञानरूडमार्गसोपा ॥ नेपातिमोहेतुधिर्मद ॥
॥ १८ ॥ श्लोकः ॥ विवेकेनात्मनो ज्ञाने एषां नालितमात्मना ॥ पौषां विक्रामायाति ज्ञानमादिस वसरं ॥ १९ ॥ टीका ॥ विवेकेदेहीचे
अज्ञाना ॥ जेहीनिरहितेनाया ॥ तयाचाज्ञानतपन ॥ हृदययोमिउदेका ॥ २० ॥ श्लोकः ॥ मंनिष्ठामभियेसते मचित्तामयितसरा ॥
अपुनर्भवमायांति विशाननासितैनसः ॥ २१ ॥ टीका ॥ मनीछबुधिमंता ॥ तत्परजयाचेचित्त ॥ सासीनवाधीनमपंथा ॥ तेबेप्र
ज्ञानकेवे ॥ २२ ॥ श्लोकः ॥ ज्ञानविज्ञानसंपने द्विजगविगजादिषु ॥ समक्षणा महामानः पंरिताः श्वपचेतुनि ॥ २३ ॥ टीका ॥
ज्ञानसंपन द्विज ॥ श्वपचेतुनीगतं ॥ समदर्शनसहज ॥ योगीराजतोसत्या ॥ २४ ॥ श्लोकः ॥ वश्यः स्वर्गो जगत्येवंजिबिमुक्ताः

3

(10A)

समेष्टयाः ॥ यतो रो वं ब्रह्म समं तस्मात्तैर्विषयी कृतं ॥ १८ ॥ टीका ॥ जेवें जग सम दे रिते ॥ निर्देव ब्रह्म सा सिद्धा केंडे ॥
 ते दे ही परी दे हा वे गडे ॥ जें मोक के जगं त ॥ २५ ॥ श्लोक ॥ प्रिया प्रिये प्राय्य हर्ष दे वौ ये धाम्पु वं तिन ॥ ब्रह्मा त्रिता असं स्रज ब्रह्म
 शाः सम बु ध्ययः ॥ १९ ॥ टीका ॥ प्रिया प्रिया जें सौ गे तेथे न करा वा उडे ग ॥ मो हा कू नि सें ग ॥ ब्रह्म निर्जा ग नि री ॥ २६ ॥ श्लोक ॥
 वरे ष्य उ वा च ॥ किं कुरु वं त्रि पु लो के पु दे व गंध र्व यो नि पु ॥ भग व न्ह प या त नै व द वि धा वि शार द ॥ २० ॥ टीका ॥ वरे ष्य लो गे
 जान ना ॥ दे व गंध र्व दि गणा ॥ कुरु व को य रू पा घना ॥ क म लो क्ष पा सो गा वे ॥ २७ ॥ श्लोक ॥ श्री ग जो न उ वा च ॥ ओं न दे म
 श्रु ते स कः स्वात्म रामो नि जा त्म नि ॥ अ धि ना श्यं स र्वं त धि न कुरु वं वि ष या दि पु ॥ २१ ॥ टीका ॥ श्री ग जान ब्रह्म लो पा र्थी ॥ स्वा
 म दे भो गि ती नि जा त्म ता ॥ ते त्वि अ वि ना श य र द धा ॥ वि ष य म मं ता ते दुः र व ॥ २८ ॥ श्लोक ॥ वि ष यो त्थानि सौ र व्या नि दुः स्वा नां
 ता नि हे त वः ॥ उ त्ति ना श क् का नै त ना स को नै त व वि त् ॥ २२ ॥ टीका ॥ वि ष य जे न जे स र व ॥ ते जा ण ग पर म दु भ व ॥ हे उ त्ति
 वि ना श य र्व क ॥ पु ष्य श्लो क ॥ ना त व ति ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ कार यो स ति का न स्य कौ श्र स्य स्तु ते च यः ॥ तौ जे तु ष ष्ठी वि र ता त्म कुरु वं वि र म
 श्रु ते ॥ २३ ॥ टीका ॥ काम को धा सि वि कुरु व ॥ जो जा यो नि सानि स नि वे क ॥ त्या गा व पर म कुरु व ॥ हो य तुः र व दे श ध उ ॥ ३० ॥ श्ल
 क ॥ अंत वि षांतः प्र का शो तः स र्वो त र ति र्ल भे त् ॥ अ सं दि षो स र्वं ब्रह्म स र्वं भू त हि ता र्थ क व ॥ २४ ॥ टीका ॥ अंत वि षु बु धि
 प्र का श ॥ आ त्म कुरु दे र म र से ॥ मी निः सं दे ह ब्रह्म भा से ॥ सा सि ग व से भू त ही त ॥ २९ ॥ श्लोक ॥ जै तारः ष उ री णो व श मि नो दे
 भिन स्त था ॥ ते षां स मं त तो ब्रह्म स्वा त्म ज्ञाने वि ना स हो ॥ २५ ॥ टीका ॥ जै यान्ती जिं किं क र्ति पु ग ण ॥ श म द म प रा य ण ॥ ते पा व तो
 ब्रह्म र्ण ॥ भू पा जा ण आ प्रा य ॥ ३२ ॥ श्लोक ॥ आ स ते पु स मा सी नो ल क्से सा नि ष या न्य हिः ॥ सं स्त भ्यं ब्रु वी मा स्ते प्रा णा या
 म प रा य णः ॥ ३३ ॥ टीका ॥ म द स न स र व स न ॥ पा लु नि क र्ति कौ श्र म न ॥ भू कृ ती ते ल स ल उ न ॥ वा यु धार णा करा वे ॥ ३१ ॥
 श्लोक ॥ प्रा णा या मं तु सं रो धं प्रा णा या न स मु द्र वं ॥ व दं ति मु न य स्त व त्रि धा भू तै वि ष श्रि तः ॥ ३० ॥ टीका ॥ प्रा णा या ने वा मु रो
 ध न ॥ सा ने त्रि वि ध ल क्ष ण ॥ ऐ से नो स ति वि व र ण ॥ सा व धा न प रि ब्र ह्म ॥ ३४ ॥ श्लोक ॥ प्र मा ण भे द तो किं चि ल पु म ध्य म मु त्त
 मं ॥ द श नि र्हा धि के र्वं णे प्रा णा या मो ल घु रू तः ॥ २८ ॥ टीका ॥ ल पु म ध्य म उ त्त म ॥ द्वा द श र व किं रू नि ने म ॥ ल पु प्रा णा या
 म कृ ग म ॥ जा ण ते व र्भ र्पा क ॥ ३५ ॥ श्लोक ॥ च तु र्विं श स धु रो यो म ध्य मः स मु रा द नः ॥ य त्रिं श द्धु व र्णो य उ त्त मः सो जि
 धी य ते ॥ २९ ॥ टीका ॥ चो री स व र्ण म ध्य म ॥ उ ति स व र्ण उ त्त म ॥ ऐ सा त्रि वि ध प्रा णा या म ॥ यो ग्यां सि पर म किं नो ति ॥ ३६ ॥
 श्लोक ॥ सिं ह शार कं क वा पि म त्त मं म दु तां थ धा ॥ न यं ति प्रा णि न स्त ह्त्वा णा या नो सु सा ध मे द ॥ ३० ॥ टीका ॥ जै से सिं ह वा
 प्र क र्ति ॥ स्तै वा वि ति ना ना प रि ॥ ते स नि प्रा णा या ना चे प रि ॥ न र ये श रि सा धा वि ॥ ३७ ॥ श्लोक ॥ पी उ यं ति म गं स्ते न
 लो को व श यं तं न प ॥ ह ले न स्त था वा पु सं स्त थ्यो न च त त नुं ॥ ३१ ॥ टीका ॥ जै से म गा चे स मु दा व ॥ दे खो नी या ध र व ॥ पी



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com